4. नगरों में सुविधाओं का प्रबंध

गांवों में पानी, सड़क आदि की व्यवस्था कैसे होती है यह तुमने पिछले पाठ में पढ़ा। गांव और शहर में क्या-क्या अंतर हैं? शहरों में किन सुविधाओं की ज़रूरत पड़ती है? इन सुविधाओं का प्रबन्ध कैसे होता है - आपस में चर्चा करो।

रहमत अली और इमरान अमरबोर आए

इमरान, अपने पिता रहमत अली के साथ बस में अमरबोर जा रहा था। अमरबोर कनियाखेड़ी के पास एक कस्बा (छोटा शहर) है, जिसकी आबादी करीब तीस-चालीस हज़ार है। इस कस्बे में इमरान के चाचा हबीब रहते हैं। हबीब चाचा की बेटी की शादी है। शादी में शरीक होने के लिए ही इमरान और रहमत अली अमरबोर जा रहे हैं।

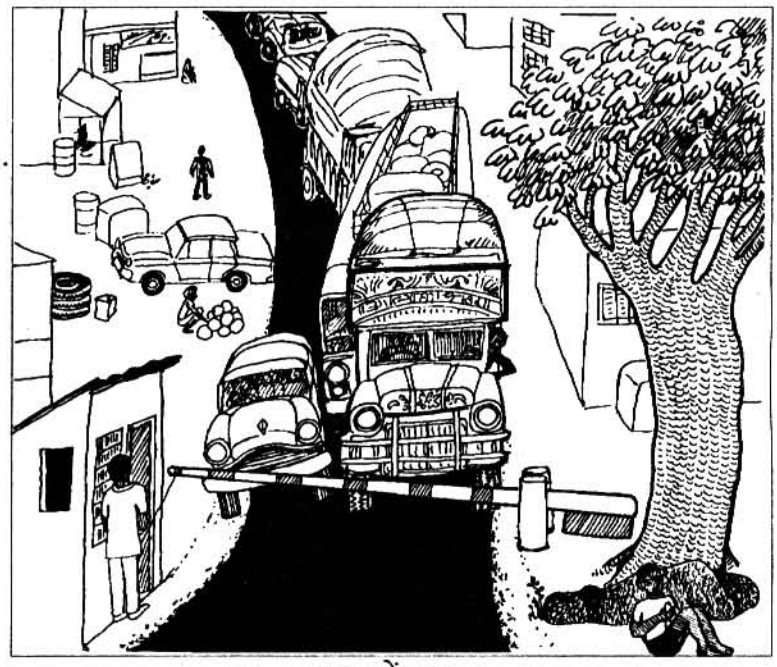

शहर में नाका

अमरबोर शहर दूर से दिखने लगा था। अचानक शहर आने से पहले ही बस रुक गई। उसे रोकने के लिए किसी ने एक लम्बा बांस सा गिराया था। कंडक्टर दौड़कर गया और पास बनी एक झोपड़ी में कुछ पैसे चुका कर आया। सड़क के एक किनारे पर खड़े एक आदमी ने बांस ऊपर किया और बस फिर शहर के अंदर चल दी। इमरान पहली बार शहर आया था। उसे ये सब नया-नया और कुछ अजीब सा लग रहा था। उसने अपने पिता से पूछा "अब्बा, उस आदमी ने अपनी बस क्यों रोकी? और कंडक्टर ने वहां पैसे क्यों चुकाए?"

"ये अमरबोर की नगरपालिका का **नाका** था। सवारी लेकर जो भी वाहन गुज़रता है जैसे बस या टेम्पो, उसे नगरपालिका को 'यात्री कर' या यात्री टैक्स चुकाना पड़ता है।" रहमत अली ने जवाब दिया।

"ये नगरपालिका क्या है?" इमरान ने फिर पूछा। रहमत अली ने समझाया, "नगरपालिका ग्राम पंचायत जैसी होती है। जैसे अपनी ग्राम पंचायत गांव में सफाई, पीने का पानी, सड़क, पुल, रपटे आदि की देख-रेख करती है, वैसे ही नगरपालिका शहर में पीने के पानी, सफाई, सड़क आदि की देख-रेख का काम करती है।"

इतने में अमरबोर का बस अड्डा आ गया। इमरान और रहमत अली ने बस से उतर कर रिक्शा लिया और घर की ओर चल दिये।

नगर पांलिका

तुमने पिछले पाठ में ग्राम पंचायत के बारे में पढ़ा था। ग्राम पंचायत में हर **वार्ड** के लोग अपना-अपना वार्ड सदस्य चुनते हैं। ये सदस्य ग्राम पंचायत का काम करते हैं। उसी तरह नगरपालिका में भी वार्ड होते हैं। हर वार्ड से एक सदस्य चुना जाता है।

यह समझ लो कि नगरपालिका एक तरह से शहर की पंचायत ही है। चूंकि शहर या कस्बे में गांव से बहुत अधिक लोग रहते हैं तो नगरपालिका के सदस्य भी अधिक होते हैं।

दस हज़ार (10,000) लोगों से अधिक जनसंख्या वाले शहर में नगरपालिका बनती है। एक नगरपालिका में 15 से 60 सदस्य होते हैं।

एक लाख (1,00,000) से अधिक लोगों के शहर में नगरनिगम बनता है। नगरनिगम में 50 से 150 सदस्य होते हैं।

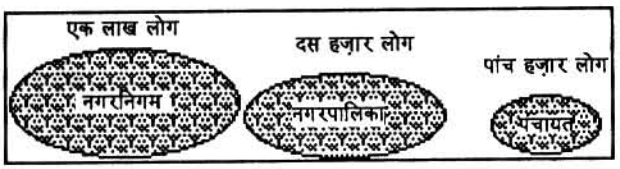

अमरबोर की नगरपालिका

सड़कें

रिक्शे से घर जाते समय, इमरान बड़ी उत्सुकता से आसपास देख रहा था।

शहर में डामर की पक्की सड़कें थीं, गांव की धूल भरी सड़कों से काफी अलग। लेकिन सड़क पर कई जगह बड़े-बड़े गड्ढे भी थे। "धीरे चलना भैया" रहमत अली ने रिक्शे वाले से कहा, "तुम्हारे शहर की सड़कें बहुत खराब हैं। नगरपालिका इन्हें सुधारती क्यों नहीं?" रहमत अली ने बातों-बातों में पूछा।

"क्या करें भैया? पहले जो नगरपालिका के **मेम्बर** थे, उन्होंने कई काम किए - एक बगीचा बनवाया, कई पक्की दुकानें भी बनवाईं। पर न तो ये सड़कें ठीक करवाईं, न पानी की समस्या पर कुछ ध्यान दिया। लोगों ने कहा, 'जब पानी की इतनी दिक्कत है और सड़कों पर इतने गड्ढे हैं तो दुकानों और बगीचों का क्या मतलब?'

जब दुबारा नगरपालिका के चुनाव हुए, तो पुराने मेम्बरों के साथ-साथ कई नए लोग मेम्बर बनने के लिए चुनाव में खड़े हुए। हर उम्मीदवार कहता, 'हम पानी की पूरी व्यवस्था ठीक कर देंगे।' लोगों ने नए उम्मीदवारों को बड़ी उम्मीद से वोट दिए। न सड़कें ठीक हुईं, न पानी की व्यवस्था।" रिक्शे वाला बताता रहा।

इतने में हबीब का घर आ गया। रहमत अली ने रिक्शे वाले को पैसे दिए। इमरान 'मुन्नू-मुन्नू' करता हुआ घर के अंदर घुस गया। मुन्नू हबीब चाचा का लड़का था। उसी से इमरान की पटती

थी। दोनों बाहर खेलने निकल गए।

पानी

थोड़ी देर बाद मुन्नू की अम्मा ने आवाज़ दी, "मुन्नू ओ मुन्नू। बेटा, नल आने वाला होगा। बाल्टी और गंज नल के पास तो रख आ। आज तुम और इमरान पानी भर लेना।"

इमरान आश्चर्य से सोचने लगा कि इन नलों में पानी कहां से और कैसे आता है? उसके गांव में तो नल नहीं हैं। सभी लोग कुएं से ही पानी भरते हैं।

वह मुन्नू के साथ पानी भरने गया। कई लोग बाल्टी, गंज लेकर नल के सामने **कतार** में खड़े थे। मुन्नू और इमरान भी खड़े हो गए। करीब छह बजे नल चालू हो गया। एक-एक करके सबने अपने-अपने बर्तन भरे। कुछ औरतें वहीं अपने बर्तन मांज रहीं थीं। मुन्नू और इमरान की बारी आई तो उन्होंने भी अपनी बाल्टियां और गंज भरा। घर ले जाकर बड़े टांके में डाल दी। फिर नल पर जाकर और पानी भरा। करीब एक घंटे इसी तरह दोनों पानी भरते रहे। फिर पानी धीमा हुआ और सात बजे बंद हो गया।

"बस इतनी देर पानी आता है यहां?" इमरान ने मुन्नू से पूछा।

"हां बस एक घंटा शाम और एक घंटा सुबह पानी आता है। उसी में सब काम करना पड़ता है। शाम को टंकी भरते हैं। सुबह नहाने-धोने, बर्तन-कपड़े में ही पानी बंद हो जाता है।" मुन्नू ने बताया।

"हमारे गांव में तो मोहल्ले में ही कुंआ है। जब चाहो पानी भर लो।" इमरान ने मुन्नू से कहा।

पानी भरना

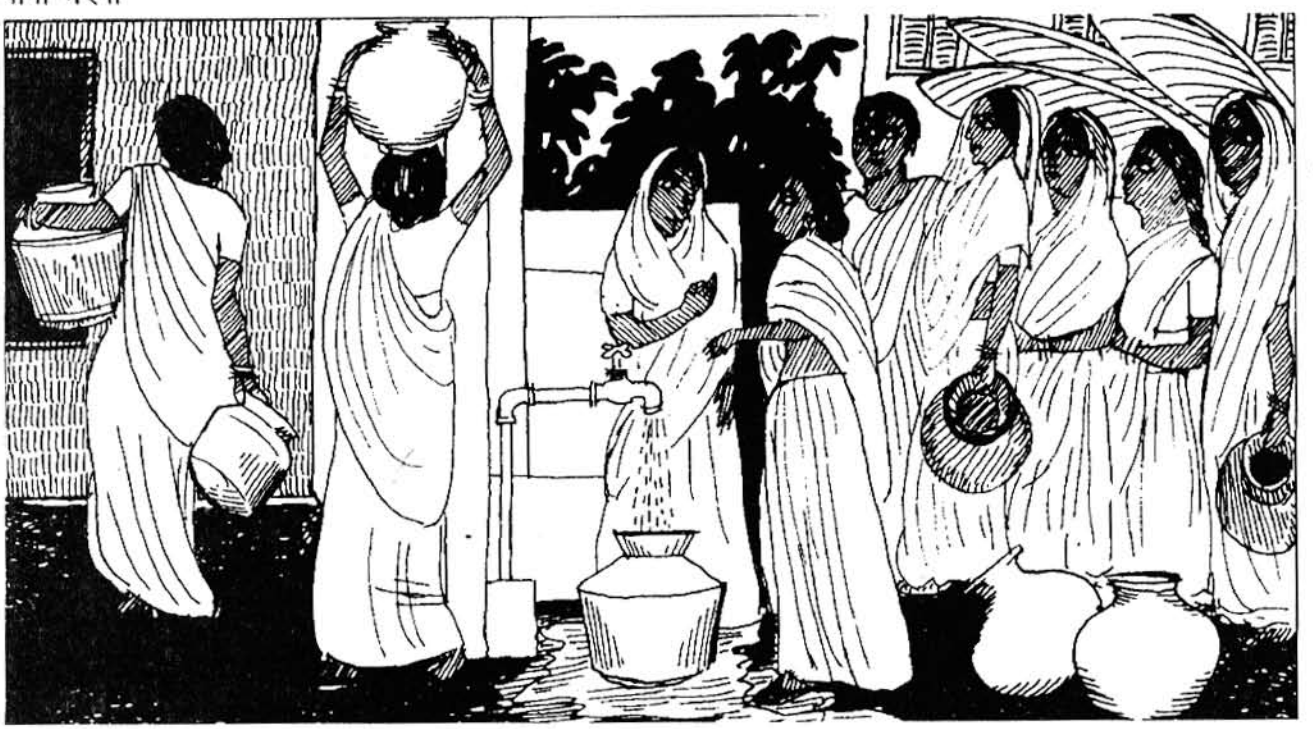

शाम को जब सब लोग खाना खाने बैठे तो इमरान ने अपने चाचा से पूछा, "ये तो बताइए, छोटे अब्बा, इन नलों में पानी आता कहां से है? और कैसे आता है?"

इमरान के चाचा उसे बताने लगे, "शहर में दो नलकूप, यानी बड़े गहरे पाईप वाले कुएं हैं। इन नलकूपों में मोटरें लगी हैं। जिनसे पानी नलकूप के ऊपर बनी बड़ी-बड़ी टंकियां में भर जाता है। इन टंकियों से हर मोहल्ले के लिए ज़मीन के नीचे पाईप बिछे हैं। जब टंकी भर जाती है तो इन पाईपों में पानी भेजने के **वाल्व** खोल दिए जाते हैं। वाल्व खोलने पर टंकी से पानी नीचे आकर इन पाईपों में बहने लगता है। इन पाइपों में ही जगह-जगह नल लगे हैं। इस तरह पानी हर मोहल्ले के नलों में पहुंचता है।"

"पर ये सब काम करता कौन है?" इमरान ने फिर पूछा।

"हमारे यहां एक नगरपालिका है। नगरपालिका के कुछ **कर्मचारी** ये काम करते हैं" चाचा ने कहा।

सड़क की बत्ती

ये सब बातें करते-करते अंधेरा होने लगा था। बाहर सड़क के किनारे लगे खम्भों पर बिजली के बल्ब चमचमाने लगे थे। हबीब चाचा ने बताया कि इन बिजली के खम्भों की देखरेख करना, शाम को बिजली जलाना और सुबह बंद करना, ये सब काम भी नगरपालिका का ही है।

हमने पिछले पाठ में देखा था कि गांवों में सड़क, पीने का पानी, साफ सफाई आदि सार्वजनिक सुविधाओं का प्रबन्ध करने के लिए ग्राम पंचायत बनाई जाती है। शहरों और कस्बों में भी पानी, बिजली, सड़क साफ सफाई जैसी सार्वजनिक सुविधाओ की ज़रूरत पड़ती है। इन सब के लिए शहरों में नगरपालिका या नगर निगम बनाई जाती है।

तुमने अमरबोर के बारे में जितना पढ़ा, इमरान के पिताजी और चाचा ने जितना बताया, उसमें नगरपालिका के क्या-क्या काम समझ में आए?

नीचे दिए गए खाली स्थान भरो -

10,000 से अधिक जनसंख्या वाले शहर में ——— बनती है।

1,00,000 से अधिक लोगों के शहर में ——— बनती है।

नगरपालिका और नगरनिगम के सदस्य हर ——— से चुने जाते हैं।

नगरपालिका में ——————— सदस्य होते हैं और नगरनिगम में ——————— सदस्य होते हैं।

नगरपालिका और नगरनिगम के नियम

नगरपालिका और नगरनिगम कैसे बनते हैं?

नगरपालिका व नगरनिगम के सदस्य कैसे बनते हैं? वे क्या-क्या काम करते हैं? इसके नियम कानून हैं। ये नियम कानून **राज्य की सरकार** बनाती है।

1. नगरपालिका या नगरनिगम 5 सालों के लिए बनाई जाती हैं।

2. शहर में रहने वाला कोई भी व्यक्ति जिसकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो, नगरपालिका या नगरनिगम का सदस्य बनने के लिए चुनाव लड़ सकता है।

3. हर नगरपालिका या नगरनिगम में कम से कम एक तिहाई महिला मेम्बर और कुछ अनुसूचित जाति के मेम्बर होते हैं।

4. नगरपालिका का एक **अध्यक्ष** होता है। वह नगरपालिका का सदस्य होता है। अध्यक्ष नगरपालिका के अन्य सदस्यों द्वारा चुना जाता है। इसके कुछ पद भी आरक्षित होते है।

5. नगरनिगम का भी अध्यक्ष होता है जो महापौर या मेयर कहलाता है। महापौर भी नगरनिगम के सदस्यों द्वारा चुना जाता है।

6. नगरपालिका अध्यक्ष और नगरनिगम महापौर ढ़ाई साल के लिए ही चुने जाते हैं।

7. हर नगरपालिका का एक मुख्य **कार्यपालिक अधिकारी** होता है और हर नगरनिगम का एक **आयुक्त**। मुख्य कार्यपालिक अधिकारी और आयुक्त जनता द्वारा नहीं चुने जाते, - सरकार द्वारा **नियुक्त** किए जाते हैं। वे ही नगरपालिका और नगरनिगम के कामों की देखरेख करते हैं और लेखा-जोखा रखते हैं।

8. शहर में रहने वाले वे सभी लोग जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हैं, नगरपालिका व नगरनिगम के सदस्यों के चुनाव में वोट डाल सकते हैं।

9. यदि किसी वजह से नगरपालिका या नगरनिगम भंग कर दी जाए तो सरकार द्वारा नियुक्त किया गया प्रशासक नगरपालिका/निगम का काम संभालता है।

सही विकल्प चुनो–

नगरपालिका का अध्यक्ष या नगरनिगम का महापौर ——— पांच साल/1 एक साल/ ढ़ाई साल के लिए चुना जाता है।

शहर में रहने वाले ———18 वर्ष/25 वर्ष/ 21 वर्ष से ऊपर उम्र के लोग नगरपालिका या नगरनिगम के सदस्य बनने के लिए चुनाव लड़ सकते हैं।

नगरपालिका और नगरनिगम ——— शहर की सड़कें बनवाने/एक जगह से दूसरी जगह बस की व्यवस्था करने/राज्य की सड़कें बनवाने का काम करती हैं।

नगरपालिका और नगर निगम को——— -चीज़ें बेचकर/लोगों की आमदनी पर कर लेकर/ पानी और संडास पर टैक्स लेकर। पैसे मिलते हैं।

गुरुजी की मदद से पता करो और इन प्रश्नों के उत्तर दो।

तुम्हारे ज़िले में कहां-कहां नगरपालिकाएं हैं? कहां पर नगरनिगम हैं?

मध्यप्रदेश में कहां-कहां नगरनिगम हैं?

यदि तुम शहर या कस्बे में रहते हो तो पता करो–

क्या तुम्हारे यहां नगरपालिका या नगरनिगम है?

उसका अध्यक्ष या महापौर कौन है?

पानी के नल पर कितने पैसे वसूल किए जाते हैं?

नगरपालिका के कर्मचारी नाली साफ करने और कचरा उठाने कब-कब आते हैं?

अमरबोर में पानी की समस्या

अमरबोर में पानी की बड़ी समस्या थी। नियमित रूप से नल नहीं आते थे। कभी-कभी तीन-तीन दिन तक पानी नहीं आता। इस समस्या से अमरबोर के लोग बहुत परेशान थे।

कर्मचारी पानी टैक्स की पर्ची देने आया।

एक दिन नगरपालिका से एक कर्मचारी सुभाष वार्ड में आया। वह मोहल्ले के लोगों को पानी और संडास का टैक्स और सड़क की बिजली के टैक्स की पर्ची देने आया था।

दो दिनों से पानी नहीं आ रहा था। कुछ लोग नगरपालिका के उस कर्मचारी पर बिगड़ पड़े, "टैक्स की पर्ची देने तो चले आते हो पर पानी तो हर कभी बंद कर देते हो। आज तीसरे दिन भी नल नहीं आया। क्यों दें हम टैक्स?"

नगरपालिका का कर्मचारी कुछ सिटपिटाया, फिर बोला, "टैक्स तो आपको देना ही पड़ेगा, नहीं तो आपके नल कट जाएंगे। रही बात पानी

नहीं आने की, ये बात आप अपने वार्ड के मेम्बर मदनलालजी से कहिए। वे नगरपालिका के पानी समिति के सदस्य भी हैं। वे यह समस्या हल कर सकते हैं।" "अरे मदनलालजी को क्या फिक्र है। उन्हें तो पता भी नहीं चलता, कब पानी आया कब नहीं। उनके यहां निजी कुआं जो है।"

मुन्नीबाई नाम की एक महिला यह सब सुनकर कहने लगी, "इस बेचारे आदमी पर बिगड़कर कुछ न होगा। यह तो नगरपालिका का कर्मचारी ही है। अगर यह समस्या सुलझानी है तो आपने वार्ड के मेंबर मदनलालजी से मिलना होगा। आखिर उसे मेंबर इसीलिए तो चुना है।"

सुभाष वार्ड के लोग मेम्बर के पास गए

सब लोग तो नहीं तैयार हुए, पर करीब 15-20 लोग मुन्नीबाई के साथ खाली बाल्टियां लेकर मदनलाल के यहां पहुंच गए। थोड़ी देर बाद मदनलाल बाहर आया। इतने सारे लोगों को खाली बाल्टियां लेकर खड़ा देख वह थोड़ा ठिठका। पूछा, "क्या बात है?" मुन्नीबाई ने कहा, "हमारे मोहल्ले में हर कुछ दिनों में नल ही नहीं आता। आज तीन दिनों से पानी नहीं आ रहा है। हम लोगों को बहुत दिक्कत होती है। आप मेम्बर हैं, आपको कुछ करना होगा। आप अगर पानी नहीं दिलवाएंगे तो हमारे मोहल्ले के सभी लोग आपके घर से पानी भरेंगे।"

मदनलाल लोगों का रवैया देखकर थोड़ा घबराया। बोला, "अच्छा रुको। आज के लिए टैंकर में पानी भिजवाने की कोशिश करता हूं। असल में ये पानी की समस्या ज़्यादा इसलिए हो रही है क्योंकि पम्प पुराने हो गए हैं। बार-बार खराब होते रहते हैं। उन्हें बदला जाना है। पर बदलने के लिए नगरपालिका के पास पैसे नहीं है। तीन साल से हम लोग सरकार से पैसा मांग रहे हैं, पर मिलता ही नहीं। अभी पम्प सुधरवाने भेजा है। कल तक नल आ जाएगा।"

कई महीने गुज़र गए। कई बार पानी नहीं आया। कभी टैंकर भेजे जाते, कभी टैंकर नहीं भी आते। अमरबोर के सभी लोग ऐसे हालातों से काफी परेशान रहने लगे। औरतें ज़्यादा परेशान होतीं, चूंकि उन्हीं को पानी भरना पड़ता था। जिनके पास पैसे थे, उन्होंने कुएं खुदवा कर मोटर लगवा लीं, या फिर हैंडपम्प लगवा लिए। पर अधिकांश लोगों की समस्या बनी रही।

अमरबोर के लोग अध्यक्ष के पास गए

मुन्नीबाई को पता था कि समस्या तभी हल

होगी जब नए पम्प के लिए पैसे आएंगे और इसके लिए लोगों को इकट्ठा होना होगा और कई बार नगर पालिका सदस्य और अध्यक्ष के पास जाना होगा। मुन्नीबाई अपने मोहल्ले के कई लोगों से मिली। पहले तो लोगों ने कहा 'हम क्या कर सकते हैं? हमारी कौन सुनता है?' पर जब कई बार पानी नहीं आया, तब कई औरतें मुन्नीबाई के साथ हो लीं।

मुन्नीबाई के मोहल्ले में ही नहीं, आसपास के मोहल्लों से भी कई लोग मिलकर नगरपालिका के अध्यक्ष के पास गए। मुन्नीबाई ने कहा, "हम, रोज़-रोज़ पानी की किल्लत से ऊब गए हैं। हमें पता है कि यहाँ के पम्प बदलवाने की ज़रूरत है। हम सरकार के लिए अर्ज़ी देने आए हैं। इस अर्ज़ी पर 500 लोगों के हस्ताक्षर हैं। आप जब सरकार को अनुदान के लिए लिखें तो हमारी अर्ज़ी भी साथ भेज दें। कम से कम उन्हें पता तो चले कि यहां के लोग कितने परेशान हो रहे हैं। अगर अनुदान की अर्ज़ी की एक प्रति हमें मिल सकती है तो हम ज़िलाधीश और विधायक से भी मिलने की कोशिश करेंगे।"

नगरपालिका का अध्यक्ष मुन्नीबाई पर खीझ गया, "हमें सिखाने आई हो? हम कई बार सरकार को लिख चुके हैं। हमारी नहीं सुनते तो क्या तुम्हारी सुनेंगे?"

मुन्नीबाई ने अपना धैर्य बनाए रखा। बोली, "पानी की ये दिक्कत पिछले तीन सालों से चली आ रही है और इससे हम बहुत परेशान हैं। हम आपकी मुश्किल भी समझते हैं। इसीलिए तो आए हैं। हम विधायक और ज़िलाधीश को भी अपनी मुश्किल समझाएंगे। उन्हें सुनना ही पड़ेगा। आखिर सरकार भी तो हमारे ही वोटों से बनती है। विधायक भी जानता है कि यदि पानी की समस्या हल नहीं हुई तो अगले चुनाव में लोग उसे वोट नहीं देंगे।"

अध्यक्ष का गुस्सा कुछ ठंडा हुआ। उसने अर्ज़ी रख ली। मुन्नीबाई ने और लोगों को इकट्ठा किया और विधायक के पास भी गई। ज़िलाध्यक्ष को भी अर्जी भेजी।

अमरबोर की समस्या हल हुई

तीन महीनों के बाद नए पम्प के लिए नगरपालिका के पास पैसे आए। अमरबोर में रोज़ पानी आने लगा। इस तरह अमरबोर में पानी की समस्या हल हुई। सब लोग मुन्नीबाई को आज भी याद करते हैं।

अब अमरबोर के लोग शहर की कोई भी समस्या सुलझाने के लिए नगरपालिका पहुंच जाते हैं। थोड़े बहुत पैसों की ज़रूरत हो तो चंदा करके इकट्ठा भी कर लेते हैं। मेम्बरों के साथ सरकार को भी अर्ज़ी लिखते हैं।

अमरबोर में क्या समस्या थी?

नगर पालिका को किस बात की दिक्कत थी?

अमरबोर की समस्या सुलझाने के लिए मुन्नीबाई ने क्या-क्या किया?

प्रतिनिधि

पिछले पाठ में हमने ग्राम पंचायत के बारे में पढ़ा था। नगर और गांव के लोग समय-समय पर अपने मोहल्लों से एक-एक व्यक्ति चुनते हैं। इन चुने

हुए 'प्रतिनिधियों' से बनती हैं नगरपालिका, ग्राम पंचायत या नगरनिगम। **प्रतिनिधि** बनाने का मतलब यह है कि लोग जिन्हें चुनते हैं, उन्हें कई ज़िम्मेदारियां दे रहे हैं जैसे, मोहल्ले की समस्याओं को दूर करना, सड़क, पानी की व्यवस्था करना आदि। इस तरह आमतौर से गांवों और शहरों में **सुविधाओं** का **प्रबन्ध** चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा होता है।

प्रशासक

कुछ जगहों की नगरपालिका या नगरनिगम के विरुद्ध उस शहर के लोग शिकायत करते हैं। शिकायत काम न करने के बारे में हो सकती है या पैसों के दुरुपयोग के बारे में। राज्य की सरकार इन शिकायतों के बारे में जांच करती है। यदि जांच में शिकायत सही निकली तो राज्य सरकार उस नगरपालिका या नगर-निगम को **भंग** कर सकती हैं। कभी-कभी दूसरे कारणों से भी राज्य सरकार द्वारा नगरपालिका भंग की जा सकती है।

भंग की गई नगरपालिका या नगरनिगम का काम संभालने के लिए राज्य सरकार एक **प्रशासक** नियुक्त करती है। तब प्रशासक ही नगरपालिका या नगरनिगम के सभी कामों पर **निर्णय** लेता है, उनकी व्यवस्था करता है। पूरा काम नगरपालिका के वही कर्मचारी करते हैं जो पहले कर रहे थे। फर्क यह है कि इन कामों का निर्णय नगरपालिका की समितियां नहीं लेतीं -- प्रशासक लेता है।

कई जगहों पर बहुत सालों तक नगरपालिका या नगरनिगम के चुनाव नहीं होते। पुरानी नगरपालिका या नगरनिगम का समय खत्म हो जाता है, तब भी वहां प्रशासक ही नगरपालिका या नगरनिगम का काम संभालता है।

अभ्यास के प्रश्न

1. नगरपालिका और नगरनिगम के कम से कम 10 कामों के बारे में लिखो। इनकी जानकारी तुम्हें पाठ के किन उप-शीर्षकों के नीचे मिली?
2. नगरपालिका या नगरनिगम कैसे बनाई जाती है? अपने शब्दों में लिखो।
3. नगरपालिका और ग्राम पंचायत में क्या-क्या अंतर हैं?
4. सही विकल्प चुनो-
   क) अमरबोर में पानी का प्रबन्ध करना ..... (नगरनिगम / पंचायत / व्यापारी / नगरपालिका) का काम है।
   ख) अमरबोर की मुख्य स्मस्या यह थी कि वहां..... (सफाई नहीं होती थी / पानी ठीक से नहीं मिलता था / लोग बहुत थे / महंगाई अधिक थी)।
   ग) इन में से कौन नगरपालिका का सदस्य नहीं बन सकता ..... (शहर की 22 वर्षीय महिला / गांव का बुजुर्ग / शहर का व्यापारी)।
5. नगर पालिका को सुविधाओं के प्रबन्ध के लिए पैसे कहां-कहां से मिलते हैं?
6. तुम शहर में रहते हो। तुम्हारे शहर में कई जगह गंदगी पड़ी रहती है और कई दिनों ठीक नहीं हुई है। तुम कैसी चिट्ठी लिखोगे और किन्हें लिखोगे? लिख कर बताओ।